

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर
परीक्षा 2022 के लिए संक्षिप्तकृत पाठ्यक्रम
विषय— संगीत (कण्ठ अथवा वाद्य अथवा नृत्य)

कक्षा—11

इस विषय में 3.15 घण्टे की अवधि का 30 अंकों का एक सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र होगा तथा 30 मिनट की अवधि की 70 अंकों की क्रियात्मक परीक्षा होगी। छात्र को कण्ठ संगीत, स्वर, वाद्य, ताल वाद्य अथवा नृत्य में से एक विषय लेना है। परीक्षार्थियों को सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक परीक्षा में अलग-अलग उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

(अ) कण्ठ संगीत— गायन

अथवा

(आ) स्वर वाद्य संगीत — वादन

सितार (65)/सरोद (66)/वायलिन (67)/दिलरूबा अथवा इसराज (68)/ बांसुरी (69)/गिटार(70)

उपर्युक्त में से कोई एक वाद्य का चयन किया जा सकेगा।

अथवा

(इ) ताल वाद्य संगीत— वादन

स्वर वाद्य संगीत —(स)ताल वाद्य संगीत— तबला (63)/पखावज (64)

उपर्युक्त में से कोई एक वाद्य का चयन किया जा सकेगा।

अथवा

(ई) नृत्य—कथक (59)

परीक्षा योजना

प्रश्न पत्र के लिए अंक	समय (घंटे)	प्रश्न पत्र	पूर्णांक
सैद्धान्तिक	3.15	30	
क्रियात्मक	3	70	100

(अ) कण्ठ संगीत—गायन

समय : 3.15 घण्टे

पूर्णांक : 30+70=100

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	सैद्धान्तिक—	
	(i) सांगीतिक परिभाषाएं, राग वर्णन, जीवन परिचय।	10
	(ii) बंदिशों का शास्त्रीय ज्ञान, स्वरलिपि पद्धति का ज्ञान,	10
	(iii) तालों एवं रागों को लिपिबद्ध करना।	10
2.	प्रायोगिक— विभिन्न गायन शैलियों का गायन।	40
	हाथ से ताल लगाने का ज्ञान।	20
	सुगम संगीत गायन एवं राग पहचानना।	10

क्र.सं.	पाठ्य वस्तु (सैद्धान्तिक)	अंकभार 30
1.	निम्न की परिभाषा	04
	नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, अलंकार, राग, जाति, थाट, लय, ताल	
2.	रागों का विस्तृत शास्त्रीय वर्णन	03
	(a) राग यमन (b) राग भैरव (c)राग देशकार	

3.	संगीतज्ञों का योगदान एवं जीवनीयँ—	03
	(a) तानसेन (b) पं. विष्णु नारायण भातखण्डे	
	(c) पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर (d) पं. भीमसेन जोशी	
4.	विविध बंदिशों का विस्तृत एवं शास्त्रीय ज्ञान	05
	(a) सरगम गीत (b) लक्षण गीत	
	(c) ख्याल (d) तराना	
	(e) ध्रुपद	
5.	पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति का ज्ञान	05
6.	पाठ्यक्रम की तालों की ठाह व दुगुन लिखना।	10
	तालें— दादरा, कहरवा, एकताल, चौताल, त्रिताल— दुगुन सहित	

(अ) कण्ठ संगीत—गायन (क्रियात्मक)

समय : 30 मिनट प्रति छात्र

पूर्णांक : 70

इकाई	पाठ्य वस्तु	अंकभार
1.	निर्धारित रागें— यमन, भैरव, देशकार।	
	(a) किसी एक राग में छोटा ख्याल आलाप तानों सहित।	20
	(b) किन्हीं दो रागों में छोटे ख्याल बंदिश	10
	(c) किसी एक राग में सरगम गीत।	10
2.	ताल को हाथ से लगाते हुए ठेका एवं दुगुन—	20
	दादरा, कहरवा, एकताल, चौताल, त्रिताल।	
3.	राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, देशभक्ति गीत, प्रार्थना एवं लोकगीत की रचनाओं में से एक गायन।	10

(आ) स्वर वाद्य संगीत — वादन

(सितार, सरोद, वॉयलिन, दिलरूबा, बांसुरी, गिटार, इसराज)

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार 30+70=100
	सैद्धान्तिक	
1.	सैद्धान्तिक—परिभाषायें, सांगीतिक तथा वाद्ययंत्र का वर्णन।	09
2.	रागों का शास्त्रीय विवरण तथा स्वरलिपि पद्धति।	08
3.	संगीतज्ञों की जीवनी तथा संगीत के क्षेत्र में योगदान।	03
4.	गत को लिपिबद्ध करना व ताल का ज्ञान।	10
	क्रियात्मक	
1.	वाद्य में गत का वादन करना।	30
2.	शास्त्रीय तालों का ज्ञान व ताल पहचाना	20
3.	उपशास्त्रीय व लोकधुन व राग पहचान।	20

(सैद्धान्तिक)

क्र.सं.	पाठ्य वस्तु	अंकभार 30
1.	निम्नलिखित परिभाषाएं— नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, राग और राग की जाति, थाट, मींड, गत।	04
2.	पाठ्यक्रम की रागों का शास्त्रीय वर्णन। यमन, भैरव, देशकार	03
3.	निम्नलिखित संगीतज्ञों कीं जीवनियाँ— पं. रविशंकर, मसीत खॉ, उ. इनायत खां।	03
4.	पाठ्यक्रम की रागों में से किसी एक राग की द्रुतगत को लिपिबद्ध करना।	05
5.	तालों का शास्त्रीय परिचय तथा उन्हें ठाह व दुगुन के साथ लिपिबद्ध करना। दादरा, कहरवा, एकताल, चौताल व त्रिताल।	05
6.	अपने वाद्ययंत्र का सचित्र वर्णन करना।	05
7.	पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति का लेखन	05

(आ) स्वर वाद्य संगीत— वादन क्रियात्मक

सितार/सरोद/वायलिन/दिलरूबा/बांसुरी/गिटार व इसराज

समय : 3.15 घंटे पूर्णांक : 70

इकाई

1.	निर्धारित रागों में— यमन, भैरव, देशकार, (अ) किसी एक राग में रजाखानी गत तोड़े एवं झाला सहित (ब) शेष दो रागों में रजाखानी गत तोड़े सहित (स) एक धुन का वादन	20 20 10
2.	शास्त्रीय तालों का परिचय— ठाह व दुगुन के साथ हाथ से ताली द्वारा तालों की पढ़न्त।	20

(इ) संगीत— वादन : तबला/पखावज (तालवाद्य)

समय : 3.15 घण्टे

पूर्णांक : 30+70=100

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
	सैद्धान्तिक	
1.	परिभाषा, ताल, वाद्य का अध्ययन।	20
2.	जीवन परिचय— ताल का ज्ञान प्रायोगिक (क्रियात्मक)	10
3.	ताल — वादन	40
4.	पारिभाषिक शब्द, संगत।	30

क्र.सं.	पाठ्य वस्तु (सैद्धान्तिक)	अंकभार 30
1.	निम्न की परिभाषा कायदा, मुखड़ा, तिहाई, परन, पेशकार, लय, गत, ताल, लयकारी (दुगुन, तिगुन)	— 08

2.	ताल के दस प्राणों का विस्तृत अध्ययन	5
3.	वाद्यों का विस्तृत अध्ययन— तबला	06
4.	संगीतज्ञों की जीवनियाँ एवं पूर्ण परिचय नाना पानसे, कुदऊ सिंह, कण्ठे महाराज,	06
5.	पाठ्यक्रम की तालों को ठाह (बराबर) दुगुन में लिखना। त्रिताल, एकताल, चौताल, झपताल।	05

(इ) संगीत— वादन ताल वाद्य तबला/पखावज (क्रियात्मक)

समय : आधा घण्टे		पूर्णांक : 70
1.	त्रिताल, एकताल, चौताल में से किसी एक ताल का विस्तृत वादन।	20
2.	पाठ्यक्रम की तालों को दुगुन में बजाना (लय साधन व गति का अभ्यास)	20
3.	किसी ताल में निम्न पारिभाषिक शब्दों को प्रायोगिक स्पष्ट करना। कायदा, मुखड़ा, तिहाई।	20
4.	मध्यलय में संगत का प्रदर्शन।	10

(ई) संगीत— कथक नृत्य (59)

समय : 3.15 घंटे		पूर्णांक : 30+70=100
क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	सैद्धान्तिक— शास्त्रीय परिभाषा व प्रायोगिक नृत्य का ज्ञान	13
2.	व्यक्तित्व अध्ययन	05
3.	प्रचलित शैलियों का सामान्य अध्ययन।	08
4.	ताल अध्ययन। क्रियात्मक—	04
1.	मुख्य प्रस्तुति व अभ्यास	30
2.	विषय की गहनता	30
3.	अन्य शैली का ज्ञान	10

(सैद्धान्तिक)

क्र.सं.	पाठ्य वस्तु	अंकभार 30
1.	अ. निम्न की परिभाषा— लय, ताल, आवर्तन, ठेका, तत्कार, आमद, सलामी ठाठ। ब. असंयुक्त हस्तमुद्राओं का ज्ञान—	04
2.	कथक नृत्य के घरानों का ज्ञान — जयपुर, लखनऊ	05
3.	नृत्यकारों की जीवनियाँ— बिरजू महाराज, बिंदादीन महाराज, सितारा देवी, पं. सुंदरप्रसाद जी।	05

4.	विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों का परिचय— भरतनाट्यम, कथक,	04
5.	लोक नृत्य का परिचय एवं राजस्थान के लोक नृत्यों का ज्ञान— घूमर, तेराताली।	04
6.	निर्धारित तालों की ठाह— दुगुन, लिपिबद्ध लिखने का अभ्यास— त्रिताल, कहरवा।	04

(ई) संगीत— कथक नृत्य (क्रियात्मक)

पूर्णांक : 70

1.	तत्कार के 5 पलटों का प्रदर्शन	10
2.	त्रिताल नृत्य प्रस्तुति— तत्कार की ठाह, दुगुन, आमद, सलामी टुकड़े, साधारण तिहाई, कवित्त।	20
3.	सीखे गए बोलों की पढंत, मुद्राओं का प्रदर्शन।	20
4.	त्रिताल में लहरे का ज्ञान व ताल की प्रस्तुति।	10
5.	किसी प्रादेशिक लोक नृत्य की प्रस्तुति।	10

परीक्षा 2022 के लिए विलोपित किये गये अध्याय/इकाई का विवरण

कक्षा :- XI विषय :- संगीत

क्रम संख्या	अध्याय/इकाई का विवरण
1.	<p>(अ) कण्ठ संगीत गायन (सैद्धान्तिक + प्रायोगिक)</p> <ol style="list-style-type: none"> रागों का विस्तृत शास्त्रीय वर्णन :- राग देस, राग—बागेश्री संगीतज्ञों का योगदान एवं जीवनियाँ—किशोरी अमोनकर रागों की बंदिशों का स्वरलिपि लेखन <p>(आ) स्वर वाद्य</p> <p>सैद्धान्तिक पक्ष (सितार/सरोद/वाँयलिन/दिलरूबा, बासुरी आदि)</p> <p>अध्याय—1 निम्नलिखित परिभाषाएँ जमजमा, गमक</p> <p>अध्याय—2 पाठ्यक्रम की रागों का शास्त्रीय वर्णन देस और बागेश्री</p> <p>अध्याय—3 निखिल बैनजी, पं. विष्णु नारायण भातखण्डे</p> <p>अध्याय—4 पाठ्यक्रम में रागों की विलम्बित गत को लिपिबद्ध करना।</p> <p>क्रियात्मक (प्रायोगिक)</p> <p>अध्याय सं.—1 निर्धारित रागों में से—देस और बागेश्री</p> <p>(अ) किसी एक राग में मसीतखानी गत</p> <p>(ब) शेष दो रागों में रजाखानी गत</p> <p>अध्याय सं.—3 वाद्य पर रागों को पहचानना</p> <p>अध्याय सं.—4 तबले पर ताल पहचानना।</p> <p>(इ) ताल वाद्य</p> <ol style="list-style-type: none"> चौगुन की लयकारी वाद्यों का विस्तृत अध्ययन — पखावज संगीतज्ञों की जीवनियाँ एवं पूर्ण परिचय

	<p>(1) उ. अल्लारक्खा खां (2) समता प्रसाद (गुडई महाराज)</p> <p>5. पाठ्यक्रम की तालों की चौगुन में लिखना – धमारताल, सूलताल क्रियात्मक (प्रायोगिक)</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. धमार ताल का विस्तृत वादन 2. पाठ्यक्रम की तालों को चौगुन में बजाना—धमार सूलताल 3. किसी ताल में निम्न परिभाषित शब्दों को प्रायोगिक स्पष्ट करना—परन, पेशकार <p>(ई) संगीत—कथक नृत्य</p> <p>ईकाई—3 नृत्यकारों की जीवनियाँ</p> <p>(अ) सितारा देवी (ब) पं. सुंदरप्रसाद जी</p> <p>ईकाई—4 विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों का परिचय – ओडेसी, मणिपुरी</p> <p>ईकाई—5 राजस्थान के लोक नृत्यों का ज्ञान चरी</p> <p>ईकाई—6 निर्धारित तालों का चौगुन लिपिबद्ध लिखने का अभ्यास—दादरा, एकताल, चौताल। क्रियात्मक (प्रायोगिक)</p> <p>ईकाई—2 त्रिताल नृत्य प्रस्तुति में चौगुन हटाई।</p> <p>ईकाई—4 एकताल में लहरे का ज्ञान व तालों की प्रस्तुति।</p>
--	---

निर्धारित पुस्तक –

स्वर विहार भाग-1 – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर।